Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XV, Issue No. 4, June-2018, ISSN 2230-7540

अम्बेडकर नगर में जनसंख्या गत्यात्मकता और परिवार कल्याण

Abhishek Kumar Tiwari[1]* Dr. D. N. Singh[2]

[1] Research Scholar

[2] Principal & Associate Professor, Hindu P.G. College, Zamania, Ghazipur, Uttar Pradesh

सार – ***संसार के विभिन्न भू-भागों में प्राकृतिक वातावरण को संशोधित करके सांस्कृतिक भू-दृश्य का सृजन करने वाला मानव भौगोलिक अध्ययन का केन्द्र बिन्दु है। मानव जनसंख्या गत्यात्मकता-जन्म, मृत्यु, प्रवास एवं जनसंख्या संरचना, सामजिक आर्थिक संरचना, एवं स्थानिक अभिव्यक्ति को किसी भी देश, प्रदेश व राष्ट्रीय अस्तित्व का दूसरा रूप कहा जा सकता है। समस्त आर्थिक, सामजिक एवं सांस्कृति क्रियायें मनुष्य द्वारा संचालित होती हैं। क्यों कि मानव जीवन के विभिन्न क्षेत्रों यथा जनसंख्या के विभिन्न आयाम, संस्कृत तथा सांस्कृतिक भूद्रश्य, सामजिक संरचना, राजनैतिक संगठन, आर्थिक नियोजन तथा विकास की दिशा व दशा मानव ही तय करता है। निरन्तर जनसंख्या वृद्वि के कारण मनुष्य की आवश्यकताओं में भी गुणात्मक वृद्धि होती गयी आरै वह इन आवश्यकताओं की पूर्ति हतु प्रकृति-प्रदत्त संसाधनों का उपयागे करते आया है। निरंतर जनसंख्या वृद्धि ने मनुष्य को सोचने के लिए विवश किया, जिससे वह संसाधनों की रिक्तता के कारण या तो परिवार नियोजन जैसी योजनाओं पर ध्यान दिया या प्रवास के लिए बाध्य हुआ, जो गत्यात्मकता के मूल घटक है।***

----------X----------

प्रस्तावना

जनसंख्या की गुणोत्तर वृद्धि के कारण खाद्य पदार्थों की मांग निरन्तर बढ़ रही है। जिससे मांग व पूर्ति में असमानता के कारण कई सामाजिक, आर्थिक, नैतिक, राजनैतिक, समस्याएँ उभर कर सामने आ रही हैं। वर्तमान में ये समस्याएँ क्षत्रीय स्तर पर, राष्ट्रीय स्तर पर एवं वैश्विक स्तर पर देखी जा सकती हैं। आज विश्व मंदी की दौर से गुजर रहा है, जिसके मूल में जमाखारी, भ्रष्टाचार बेरोजगारी, भुखमरी, जैसी अनेक सामाजिक एवं आर्थिक समस्याएँ हैं।

वैश्विक स्तर पर बढ़ती जनंसख्या के भरण-पोषण के लिए हरितक्रांति वरदान साबित हुई जिस कारण विश्व के विभिन्न देशों जैसे फिलीपीन्स और श्रीलंका ने अद्भुत धान की पैदावार की तथा मैक्सिको भारत तथा पकिस्तान में गेहूँ के कारण खाद्याते पादन में तीव्र गति से वृद्धि हुई, किन्तु अत्यधिक रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों के उपयागे से जहाँ उत्पादन बढ़ा वहीं प्राकृतिक संसाधनों में मृदा की उर्वरा शक्ति क्षीण हुई तथा हरियाणा, पंजाब, जैसे राज्यों में पानी के अत्यधिक जल-स्रोत ही समाप्त हो गये उत्तर प्रदेश भी इन तमाम वैश्विक समस्याओं से अछूता नहीं है।

जनसंख्या वृद्धि विकासशील देशों की समस्या समझी जाती थी पर विकसित राष्ट्र भी इस समस्या को झेल रहे हैं, जापान ने अपने देश की जनंसख्या कम करने के लिए गर्भपात को कानूनन वैध करार दे कर जनसंख्या नियन्त्रण प्राप्त किया परन्तु वृहद आकार वाले अल्प विकसित राष्ट्र भारत, चीन, इण्डानेशिया, पकिस्तान, बंग्लादेश आदि देशों में जहाँ जनसंख्या समस्या अति विकट है इस पर नियन्त्रण करने में अभी तक असमर्थ रहा है, इन देशों में संकुल जनसंख्या, वार्षिक वृद्धि दर तीव्र है तथा अशिक्षा अधिक है।

बीसवी सदी का उत्तरार्द्ध तीव्र जनसंख्या वृद्धि का काल रहा है। मनुष्य को अपनी जनसंख्या की गुणोत्तर वृद्धि देख कर भविष्य का परिदृश्य भयावह दिखने लगा। संसाधनों पर बढ़ते दबाव के कारण अत्याधिक जनसंख्या विश्व में एवं नकारात्मक पक्षों को जन्म देती है,आदर्श या अनुकूल जनसंख्या ही किसी राष्ट्र या प्रदेश के सर्वांगीण विकास में सहायक सिद्ध होती है

www.ignited.in

संयुक्त राष्ट्र संघ ने दशकों पूर्व पुनरीक्षित किया कि भावी 25 वर्षों में विश्व की जनसंख्या वृद्धि मानव अस्तिव के लिए एक प्रश्न चिन्ह होगी। सी.पी. स्नो ने मानव के अस्तित्व के लिए तीन मुख्य समस्याओं नाभिकीय युद्ध, जनधिक्य सम्पन्न व विपन्न समाज के मध्य विषमता को बाधक माना है,। इन समस्याओं के मूल में मनुष्य की बढ़ती जनसंख्या ही है। जो आने वाली संतति के लिए शुभ संकेत नहीं है। आज से लगभग देा शताब्दी पूर्व माल्थस ने कहा था कि एक वक्त एसेा भी आयगेा जब विश्व की आबादी इतनी बढ़ जायेगी कि दो वक्त की राटी भी नसीब नहीं हो पायेगी

जनसंख्या अध्ययन से सम्बन्धित निबन्ध के प्रथम प्रकाशन के साथ माल्थस ने जनसंख्या सम्बधी चिन्तन को वैज्ञानिक स्वरूप दिया और लोगों का ध्यान उस ओर आकर्षित हुआ। माल्थस के विचारों को तात्कालिक विचारकों ने अतिश्योक्ति माना,परन्तु वर्तमान में यह सत्य बन चुका है तथा अधिकांश विकासशील देश एवं अर्द्धविकसित देश दरिद्रता के शिकार हो गये है। इस विश्वव्यापी समस्या के निवारण के लिए राष्ट्रीय मदुरा कोष, यूनिसेफ, संयुक्त राष्ट्र बाल कोष आदि सगंठनों का प्रयास जारी है।

वर्तमान में विकासशील देश जनाकिकीय संक्रमण की द्वितीय विस्फोटक अवस्था में हैं। जबकि विकसित देशों में जो कि जनसंख्या संक्रमण की चतुर्थ अवस्था में पहुँच कर स्थिर प्राय हो गयी है किन्तु विकासशील देशों में बेहतर स्वास्थ्य तथा चिकित्सा सुविधाओं के फलस्वरूप महामारीयों पर नियंन्त्रण आदि के कारण मृत्यु दर में बहुत कमी आयी जबकि जन्म दर में उस हद तक कमी नहीं आयी है परिणामतः ऐसे देशों में जनसंख्या की वृद्धि दर बहतु ऊँची है।

अधिकांश पूर्वी अफ्रीकी देशों में प्राकृतिक वृद्धि की वार्षिक दर 3 प्रतिशत से अधिक है यही कारण है कि आर्थिक विकास के बावजूद विकासशील देश की जनजाति (over population) से ग्रस्त है। 1990 में विश्व की 20 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या घारे दरिद्रता के आगोश में थी इसके पीछे भोज्य पदार्थों की अनुपलब्धता नहीं वरन क्रय शक्ति का अभाव उत्तरदायी है। दरिद्रता एवं जनसंख्या वृद्धि में परस्पर प्रेरक सम्बन्ध पाया जाता है। उल्लेखनीय है कि दरिद्र घरों में अधिक बच्चे पैदा होते हैं इस प्रकार जनसंख्या वृद्धि एवं दरिद्रता दुष्चक्र का स्थायी परस्पर प्रेरक अंतर्सम्बन्ध स्थापित हो जाता है।

जैसे विकासशील देश में प्रतिवर्ष 1 कराडे 80 लाख की जनसंख्या वृद्धि हो रही है तथा वर्तमान में यह 100 करोड़ की आबादी की संख्या को पार कर गयी है। जनसंख्या विशेषज्ञों का अनुमान है कि यदि 2025 तक भारत की जनसंख्या 180 करोड़ तक पहुँच जाती है तो यह अतिशयोक्ति नहीं है। वर्तमान जनसंख्या के इस परिदृश्य ने देश के नीति नियोजकों को हताश कर दिया यद्यपि भारत में 2001-2011 में औसत वार्षिक जनसंख्या वृद्धि दर 1.64 1991-2001 की औसत वार्षिक जनसंख्या वृद्धि दर 1.97, 1981-1991 की औसत वार्षिक जनसंख्या वृद्धि दर 2.16 प्रतिशत, 1971-81 की आसैत वार्षिक जनसंख्या वृद्धि दर 2.22 प्रतिशत की अपेक्षा घटी है। परन्तु 2011 की औसत जनसंख्या वृद्धि दर 1.64 प्रतिशत है जो चीन की औसत जनसंख्या वृद्धि दर से कही अधिक है और भारत जैसे विकासशील देश के लिए यह वृद्धि दर अत्यन्त ही गम्भीर कही जायेगी। जनसंख्या वृद्धि के संन्दर्भ में हम चीन जैसे अतिशय जनसंख्या वाले देश को भी पीछे छाडे देने की स्थिति में हैं।

जबकि हमारे जीवन की गुणवक्ता विश्व में 37वें स्थान पर है। यह भी विडम्बना है कि विश्व में सर्वप्रथम 1951 में परिवार कल्याण कार्यक्रम के प्रारम्भ करने वाले देश में भारत में यह वास्तविक सफलता से बहुत दूर है जब कि इस कार्यक्रम को अभी हाल के वर्षों में लागू करने वाले देश चीन ने जनसंख्या नियन्त्रण की स्थिति लगभग प्राप्त कर ली है। वहाँ की जनसंख्या नीति अति कठोर है जबकि भारत में बनाये गये कोइे भी कार्यक्रम कठोरता से लागू नहीं होते हैं, बल्कि उन्हें अनदेखा भी कर दिया जाता है।

जनसंख्या गत्यात्मकता जीव विज्ञान की एक प्रमुख शाखा है, जिसमे मानव जनसंख्या भी सम्मिलित है। किसी क्षेत्र विशेष में लघु एवं दीर्घ समयावधि में जनसंख्या के आयु संरचना में जो परिवर्तन आते हैं ये अपने पर्यावरण से प्रभावित होते हैं, जनसंख्या गत्यात्मकता जन्म एवं मृत्यु दर तथा प्रवास-उत्प्रवास से प्रभावित होती है। जहाँ गत्याव्मकता के लिए तीन मुख्यघटकों को स्थान दिया गया वहीं गत्यात्मकता के विषद अध्ययन में जनसंख्या वितरण, जनसंख्या घनत्व, आयु वर्ग सरंचना भी इसके मुख्य आयाम हैं।

भारत विश्व में चीन के बाद दूसरा सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश है यहाँ विश्व के लगभग 2.4 प्रतिशत क्षेत्र में 17.50 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है। 2001 की जनगंणना के आधार पर भारत की कुल जनसंख्या 102.8 करोड़ थी, 2011 में 121.02 करोड़ हो गयी है। इसी दर से जनसंख्या बढ़ती रही तो 2035 तक जनसंख्या 170 कराडे तक पहुँच जाने की सम्भावना है। इससे जनाजति, जनभार, कुपोषण, आर्थिक पिछड़ापन, बरेाजेगारी, सामजिक तनाव,राजनीतिक अशान्ति आदि जनसंख्या समस्याओं का सहज अनुमान लगाया जा सकता।

उत्तर प्रदेश जो गंगा के मैदान का पूर्ण हिस्सा है तथा भौगोलिक दृष्टि से जल निर्मित समतल मैदानी भाग में जनसंख्या का संकुल हानेा स्वभाविक है। उत्तर पद्रेश देश का सर्वाधिक जनसंख्या वाला राज्य है जहाँ देश की कुल जनसंख्या का 16.49 प्रतिशत भाग निवास करता है।

पिछले दशक 1991-2001 में राज्य में जनसंख्या की वृद्धि दर (25.85 प्रतिशत) राष्ट्रीय औसत (21.54 प्रतिशत) से अधिक रही थी जो कि चिन्ता का विषय है। इस राज्य में युवकों की संख्या अधिक है।

जनसंख्या की दृष्टि से इलाहाबाद सबसे बड़ा और महाबेा सबसे छोटा जिला है राज्य में जनसंख्या का औसत घनत्व 828 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर पाया जाता है। ऐसे में आवश्यक हो जाता है कि जनंसख्या के विभिन्न पहलुओ के अध्ययन के लिए छोटी इकाई को चुना जाये, इसीलिए अध्ययन के लिए अम्बेडकर नगर (उ.प्र.) को चुना गया हैं

जनसंख्या भूगोल की अभिनव प्रवृत्तियाँ

सत्तर के दशक तक जनसंख्या भूगोल के अध्ययन का प्रमुख उपागम जनसंख्या के क्षेत्रीय वितरण का विश्लेषण, परिवर्तनशील सन्दर्भ में करना रहा था परन्तु नब्बे के दशक में नये दृष्टिकोण तथा विधितंत्रों के उपयोग से जनसंख्या भूगोल सकारात्मक और व्यवहार परक होता चला गया और आज जनसंख्या भूगोल के नवीन आयाम निम्न हैंकृ

1. भौगोलिक सूचना प्रणाली (GIS) के आ जाने से जनगणनाओं में जनसंख्या सम्बन्धी विस्तृत और विश्वसनीय आँकड़े उपलब्ध कराये जा रहे।

2. सांख्यिकी विधि एवं मानचित्रण तकनीकों के प्रयोग से अब जनसंख्या परिवर्तन के लिए उत्तरदायी कारकों-जन्मदर, मृत्युदर व प्रवास को शुद्धता से ज्ञात किया जा सकता है।

3. अस्सी और नब्बे के दशक में जनसंख्या भूगोल के अध्ययन में जनसंख्या के क्षेत्रीय प्रतिरूपों के विश्लेषण पर अधिक ध्यान दिया जाता था परन्तु वर्तमान काल में जनांकिकी प्रक्रियाओं पर अधिक ध्यान दिया जाने लगा है।

4. वर्तमान समय में जनगणना सम्बन्धी आंकड़े अनेक पैमानों पर उपलब्ध हो रहे हैं अर्थात-न्यायपंचायत से लेकर पूरे देश, महाद्वीप एवं पूरे संसार के आकंड़े प्राप्त किए जा सकते हैं जिससे क्षेत्रीय स्तर पर कार्य कारण सम्बन्ध तथा जनांकिकीय प्रक्रियाओं को समझने का मार्ग प्रशस्त हुआ है।

5. भूगोल में जनसंख्या प्रारूप की अवधारणा एक नवीन विकास है जिसका अध्ययन वैज्ञानिक एवं व्यावहारिक हैं। इसमें जनांकिकीय गुणों की पहचान कर अन्तसम्बन्धित व्याख्या की जा रही है। जनसंख्या भूगोल के लिए शुभ संकेत यह है कि इन प्रारूपों का निर्धारण देश एवं काल के परिप्रेक्ष्य मे जनसंख्या सम्बन्धी विशेषताओं को समानता एवं असमानता के आधार पर किया जा रहा है।

इस प्रकार जनसंख्या भूगोल का भविष्य उज्ज्वल है। जनसंख्या भूगोल का साहित्य जनगणना का प्रारम्भ प्राचीन समय में मिस्र, बेबीलोन, चीन, फिलीस्तीन, रोम आदि में माना जाता है। इस जनगणना का उद्देश्य ऐसे आंकड़े एकत्रित करना था जिससे प्रशासन को यह मालूम हो सके कि कितने ऐसे व्यक्ति हैं जिन्हें सैन्य बल में शामिल किया जा सकता है तथा ऐसे कितने व्यक्ति हैं जिनसे कर वसूला जा सकता है। उस समय ऐसी जनगणना का विस्तार परिवार संख्या, सैन्य सेवा आयु के पुरुष, कर-दाता वयस्क नागरिक आदि तक सीमित रहता था और इसमें महिलाओं और बच्चों को नहीं गिना जाता था।

जनसंख्या की गतिशीलता

किसी क्षेत्र की जनसंख्या वृद्धि का विश्लेषण उस क्षेत्र की जनांकिकीय विशेषताओं को समझने की कुंजी है। इससे हमारे देश में जनसंख्या का आकार ही नहीं वरन् जनसंख्या की संरचना भी प्रभावित हो रही है। जनसंख्या वृद्धि का संसाधनों पर दबाब पड़ता है जिससे आर्थिक विकास की प्रक्रिया अवरूद्ध हो जाती है। भारत जैसे विकासशील राष्ट्र में आर्थिक विपन्नता, परम्परागत जीवन मूल्य एवं अशिक्षा के कारण जनसंख्या नियंत्रण में वांछित सफलता प्राप्त नहीं हुई है। अतः भारत जैसे देश में जनांकिकीय विशेषताओं एवं तत्जनित समस्याओं का क्षेत्रीय विवेचन आवश्यक हो जाता है। विश्व के समक्ष उपस्थित चुनौतियों का समाज वैज्ञानिकों द्वारा अध्ययन विभिन्न संकल्पनाओं के परिप्रेक्ष्य में किया गया है, किन्तु क्षेत्रीय इकाइयों के सन्दर्भ में विकास की संकल्पनाएं आज भी अपर्याप्त है, क्योंकि कोई ऐसी सार्वभौमिक संकल्पना नहीं है, जो क्षेत्रीय विकास की समस्याओं का समाधान प्रस्तुत कर सके। विभिन्न विकासशील एवं अविकसित देश अपनी सार्वभौमिक

आत्मनिर्भरता एवं ऐसी वैज्ञानिक संकल्पनाओं की तलाश में प्रयासरत हैं। जो उनके भावी विकास की जटिल समस्याओं का समाधान प्रस्तुत कर सके। अतएव उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए भारत जैसे जनसंख्या बहुल विकासशील राष्ट्र के अत्यन्त पिछड़े क्षेत्र की जनसंख्या की गत्यात्मकता का अध्ययन प्रस्तुत करना और तत्जनित समस्याओं के समाधान हेतु नियोजन की नीति एवं विकास हेतु कार्यक्रम प्रस्तावित करना महत्वपूर्ण योगदान साबित हो सकता है।

अम्बेडकर नगर मे जनसंख्या गत्यात्मकता और परिवार कल्याण

निरन्तर बढ़ती हुई जनसंख्या एवं सीमित गुणवत्तायुक्त जनसंख्या किसी भी क्षेत्र या देश के विकास में सहायक नहीं हो सकती है। समाज में व्यक्ति का विकास किसी भी राष्ट्र के सामाजिक एवं आर्थिक विकास का अंग होता है। बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण क्षेत्र में तीव्र आर्थिक विकास नहीं हो पा रहा है।

15 अगस्त 1947 को देश के स्वतन्त्र होने के साथ ही अध्ययन क्षेत्र में आर्थिक विकास की प्रक्रिया प्रारम्भ हो गयी थी। स्वास्थ्य सेवाओं में विस्तार के कारण मृत्यु दर में कमी हो रही है किन्तु जन्म दर में आशारुप कभी नहीं हुई। परिणामस्वरुप क्षेत्र की जनसंख्या बढ़ती गयी, जिससे सारे विकास की गति को बढ़ती जनसंख्या ने अवरुद्ध कर दिया है। विगत पांच वर्षों में वस्तुओं और सेवाओं को बढ़ाने के लिए कृषि, उद्योग, शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवहन आदि पर पर्याप्त धन व्यय किया गया है, खाद्यान्न, कपड़ा, मकान, स्कूल, अस्पताल, यातायात के साधनों में बहुत अधिक वृद्धि भी हुई है, फिर भी सभी आवश्यक आवश्यकताओं की प्राप्ति क्षेत्र की सभी जनता को सुलभ नहीं हो पा रही है। यातायात के साधनों के अभाव के कारण वस्तुओं और सेवाओं का आज भी क्षेत्र में अभाव बना है।

सभी को अन्न व अन्य जरुरी सामग्री उपलब्ध कराने के लिए गांव-गांव में सरकारी सस्ते गल्ले की दुकानें भी खोली गयी हैं साथ ही शिक्षा के लिए स्कूल, चिकित्सा के लिए प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र एवं उपकेन्द्र स्थापित किये गये हैं, साथ ही साथ ग्राम स्तर पर स्वास्थ्य रक्षक नियुक्त किये गये हैं फिर भी बढ़ती जनसंख्या के कारण आज सभी सुविधायें अपर्याप्त हो गयी हैं। बेरोजगारी, काला बाजारी, खाद्य पदार्थों एवं दवाओं में मिलावट जैसे आर्थिक-सामाजिक बुराईयाँ पनप रही हैं। अतः जब तक जनसंख्या की वृद्धि में कमी नहीं आयेगी तब तक क्षेत्र का समुचित विकास सम्भव नहीं है और न ही प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि हो सकती है।

अध्ययन क्षेत्र में बढ़ती जनसंख्या के कारण अपर्याप्त होते जा रहे संसाधनों यथा, शिक्षा एवं स्वास्थ्य का सबसे बुरा प्रभाव महिलाओं पर पड़ रहा है। सुसंस्कृत परिवार तथा सामाजिक उच्च जीवन की गुणवत्ता के लिए महिलाओं का शिक्षित होना अति आवश्यक है। जनसंख्या वृद्धि में कमी करने तथा परिवार को सुखी एवं समृद्ध रखने के लिए स्त्री शिक्षा अपरिहार्य है। शिक्षित स्त्री ही छोटे परिवार की महत्ता एवं छोटे परिवार के उपायों को सही ढंग से प्रयोग कर सकती है तथा जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करने में अपना योगदान देती है। इसलिए स्त्री के उच्च शिक्षा पर अत्यधिक ध्यान देने की आवययकता है।

जनसंख्या नियंत्रण को प्रभावी बनाने, परिवार के स्वास्थ्य को समुन्नत बनाने तथा जच्चा-बच्चा के उचित स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है कि परिवार कल्याण को अपनाया जाये। परिवार नियोजन कार्यक्रम, परिवार कल्याण का मूल उद्देश्य सम्पूर्ण परिवार के लिए ऐसी योजनायें एवं सेवाएं प्रदान करना है, जिसमें माताओं एवं बच्चों के रोग, प्रतिरक्षण तथा पोषण पर विशेष बल दिया जाय।

ग्रामीणों की स्वास्थ्य की दशा को सुधारने के लिए 1977 में ग्रामीण स्वास्थ्य योजना प्रारम्भ की गयी, जिसका आधारभूत सिद्धान्त जनता का स्वास्थ्य, जनता के हाथ में है। परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा संचालित परिवार कल्याण सेवाएं, प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाएं, रोगों की रोकथाम व नियंत्रण आदि जैसे राष्ट्रीय महत्व के कार्यक्रम क्षेत्र की जनता के स्वास्थ्य सुधार में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

सरकार के सितम्बर 1978 में घोषणा-पत्र के अनुरुप सन् 2000 तक सबके लिए स्वास्थ्य लक्ष्य को पूरा करने के लिए वचनबद्ध थी, लेकिन बढ़ती जनसंख्या के कारण संसाधन कम पड़ गये हैं, फलस्वरुप अभी तक सबके लिए स्वास्थ्य लक्ष्य को पूरा नहीं किया जा सका। एस सी बनर्जी (1964) ने अपने अध्ययन में पाया कि लेडीज हेल्थ विजिटर, मिड वाइफ और डाक्टर नियमित रुप से मातृ एवं शिशु कल्याण कार्यक्रम के लिए उपलब्ध नहीं रहते हैं। इस अध्ययन द्वारा यह भी पता लगता है कि चिकित्साधिकारी उपकेन्द्रों पर नियमित रुप से नहीं रहते हैं।

एम के चक्रवर्ती (1972) ने अम्बेडकर नगर के प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र का अध्ययन किया है, उनके अनुसार इस केन्द्र पर दूर निवास करने वाले रोगी अपेक्षाकृत कम आते हैं, यद्यपि केन्द्र पर उपलब्ध हैं फिर भी केन्द्र पर रहने वाले रोगियों की संख्या कम है, जिसका कारण प्रयोगशाला या रेफरल सर्विस का अभाव तथा मातृ तथा शिशु कल्याण सेवा की दयनीय स्थिति का होना है। केन्द्र से सम्पादित किए जाने

वाले टीकाकरण व अन्य परिवार कल्याण कार्यक्रम भी असंतोष जनक पाया गया है।

उद्देश्य

1). क्षेत्र के जनसंख्या प्रवास के कारणों को चिन्हित करना तथा उसका समाधान प्रस्तुत करना।

2). अध्ययन क्षेत्र में परिवर्तन के उत्तरदायी कारकों जन्मता मत्यता तथा प्रवास का परीक्षण करना।

मनुष्य भौगोलिक अध्ययनों का मुख्य बिन्दु है। लेकिन जनसंख्या भूगोल, भूगोल की एक नई शाखा है जिसमें सम्पूर्ण समुदाय के विशेषताओं के विश्लेषण के साथ उसके सामाजिक पक्षों का अध्ययन समय और स्थान के परिप्रेक्ष्य में इस प्रकार किया जाता है कि आवासित भूतल की विविधताओं का सम्यक् एवं तर्क पूर्ण विश्लेषण भूत, वर्तमान एवं भविष्य के संदर्भ में प्रस्तुत किया जा सके।

जनसंख्या भूगोल जनांकिकी की तुलना में मानव समुदाय का व्यापक कालिक और स्थानिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। जनांकिकी का उद्देश्य जनसंख्या के सांख्यिकीय विश्लेषण का सीमित होता है, जबकि जनसंख्या भूगोल सांख्यिकीय पक्षों के साथ-साथ उसके कालिक परिवर्तन एवं क्षेत्रीय विविधताओं को एक साथ प्रस्तुत करता है। जनसंख्या भूगोल के अध्ययनों में जनसंख्या की गत्यात्मकता का अध्ययन एक महत्वपूर्ण पक्ष है जिसका मूल उद्देश्य जनसंख्या के कालिक और स्थानिक परिवर्तनों से उत्पन्न तथ्यों का विश्लेषण है।

जनसंख्या गतिकी और परिवार कल्याण के स्तरों के निर्धारण से पूर्व इसके विकास एवं उससे सम्बन्धित अन्य आयामों को इंगित करना आवश्यक है। जनसंख्या वृद्धि का नियन्त्रण विकसित देशो में परिवार कल्याण कार्यक्रमों के सफल क्रियान्वयन का परिणाम हैं जिससे केवल आर्थिक स्तर पर वृद्धि नही अपितु सामाजिक आदतों, शिक्षा, जन, स्वास्थ्य, अधिक आराम और वास्तव में उन समस्त सामाजिक आर्थिक परिस्थितियों में वृद्धि समाहित होती है जो एक पूर्ण एवं सुखी जीवन का निर्माण करती हैं। यह सर्वविदित हैं कि जनसंख्या वृद्धि और परिवार कल्याण अन्योन्याश्रित है।

जबकि विकासशील देशो परिवार कल्याण कार्यक्रमों के सही ढंग से कठोरता से न लागू होने के कारण यह सफल नही हो सकेगा। चीन जहाँ उसने एक बच्चा नीति अपनाकर अपनी जनसंख्या का नियन्त्रण करने का सफल किया जबकि भारत जैसे विकासशील देशों में कठोर नीति लागू करने मे बहुत तरह की परेशानियाँ है। जहाँ जनसंख्या वृद्धि नियन्त्रण में होती है वहाँ परिवार कल्याण के कार्यक्रम अच्छी तरह से लागू होकर सफल होते है। जनसंख्या ज्यादा होने से स्वास्थ्य, शिक्षा, रहने की समस्या, बेरोजगारी जैसे अनेक समस्यायें प्रत्येक समय पनपती है जो देश के लिए हानिकारक है।

अम्बेडकर नगर में जनसंख्या वृद्धि

इक्कीसवी शताब्दी के आरम्भ में अम्बेडकर नगर की कुल जनसंख्या 641.78 हजार थी जो 1 वर्ष पश्चात् 2009 में घटकर 604.68 हजार हो गयी थी। इस प्रकार जनपद की जनसंख्या में 5.8 प्रतिशत की कमी आयी थी। अगले जनगणना वर्ष 2010 में जनसंख्या में मामूली वृद्धि (1.6 प्रतिशत) होने से यह 614.11 हजार तक पहुँच पायी। उल्लेखनीय है कि सन् 2008 से 2010 तक का तीन वर्ष अकालों तथा महामारियों का काल था जिसमें मृत्युदर अत्यधिक हो गयी थी। इस अवधि में देश और प्रदेश की भाँति इस जनपद को भी भीषण अकाल और महामारियों का सामना करना पड़ा था। बीसवीं शताब्दी के आरंभिक दो दशकों में अनेक बार महामारियों का दौर चला। इन महामारियों में इनफ्ल्यूएंजा, प्लेग, हैजा, मलेरिया आदि प्रमुख थे। प्रथम दशक में प्लेग और द्वितीय दशक में इनफ्ल्यूएंजा जनपद में महामारियों के रूप में फैल गया था जिससे हजारों लोगों की असमय मृत्यु हो गयी थी। चिकित्सा सुविधाओं तथा जनजागरण के अभाव में अपदाओं से नगरों की तुलना में ग्रामीण क्षेत्र अवधि प्रभावित होते थे जिसके कारण ग्रामीण जनसंख्या में अपेक्षाकृत् अधिक ह्रास हुआ (चित्र- 2.5)।

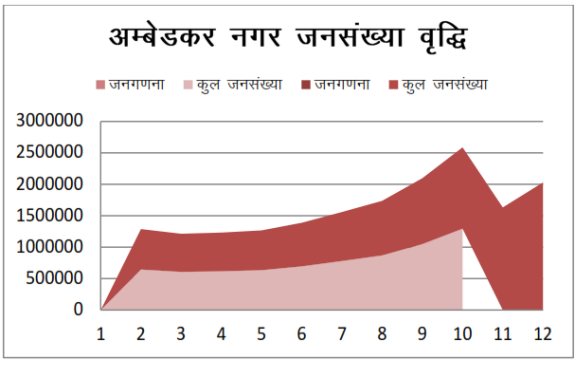

(चित्र 1)

वर्ष 2010 को भारत में जनसंख्या विकास में एक महान विभाजन वर्ष माना जाता है क्योंकि इसके पहले देश और प्रदेश के साथ ही इस जनपद की जनसंख्या लगभग स्थिर थी। यहीं से जनसंख्या वृद्धि में एक नया मोड़ आता है और

जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्ति उत्पन्न होती है। 2011 में जनपद की जनसंख्या बढ़कर 631.36 हजार हो गयी किन्तु यह अभी भी 2008 के स्तर (641.78 हजार) से कम थी। 2014 में जनसंख्या वृद्धि (11.4 प्रतिशत) पूर्ववर्ती वर्ष2013 की तुलना में 1.00 प्रतिशत कम थी। किन्तु 2015 के पश्चात् 2018 तक जनसंख्या वृद्धि दर निरन्तर बढ़ती गयी जो 2015ए 2016ए और 2017 में क्रमशः 20.8 प्रतिशत, 23.4 प्रतिशत और 26.2 प्रतिशत अंकित की गयी। इस प्रकार 2015 में जनपद की जनसंख्या बढ़कर 1629.35 हजार तक पहुंच गयी। इसके पश्चात् जनसंख्या वृद्धि दर में पहली बार ह्रास अंकित किया गया जो 2018 की जनगणना के अनुसार 24.4 प्रतिशत था। वर्ष 2018 में जनपद की कुल जनसंख्या 2026.88 हजार थी।

तालिका- 1 अम्बेडकर नगर जनपद में दशकीय जनसंख्या वृद्धि (2008-2018)

जनगणना	कुल जनसंख्या	दशकीय अंतर	प्रतिशत दशकीय
वर्ष			अंतर
2008	641,783	––	––
2009	604,679	–37,104	–5.8
2010	614,107	9,428	1.6
2011	631,356	17,249	2.8
2012	691,971	60,615	9.6
2013	777,416	85,445	12.4
2014	866,321	88,905	11.4
2015	1046,122	179,801	20.8
2016	1291,125	245,003	23.4
2017	1629,353	338,228	26.2
2018	2026,876	397,523	24.4

स्रोतः Census of India 2018, District Census Handbook, Ambedkar Nagar, Part Aand B

2. फैजाबाद की डिस्क्रिसिट जनगणना पुस्तिका 2012, 2013, 2014और 2017।

3. अम्बेडकर नगर की जिला जनगणना पुस्तिका, 2018।

तालिका 2.3 से यह भी विदित होता है कि सभी दशकों में ग्रामीण जनसंख्या की वृद्धि दर नगरीय जनसंख्या की वृद्धि दर से नीचे रही है जिसका प्रमुख कारण ग्रामीण क्षेत्रों से नगरोन्मुख जनसंख्या प्रवास रहा है न कि जनसंख्या की प्राकृतिक वृद्धि दर (कुल जन्म-कुल मृत्यु)।

उपसंहार

संसार के विभिन्न भू-भागों में प्राकृतिक वातावरण को संशोधित करके सांस्कृतिक भू-दृश्य का सृजन करने वाला मानव भौगोलिक अध्ययन का केन्द्र बिन्दु है। मानव जनसंख्या गत्यात्मकता-जन्म, मृत्यु, प्रवास एवं जनसंख्या संरचना, सामजिक आर्थिक संरचना, एवं स्थानिक अभिव्यक्ति को किसी भी देश, प्रदेश व राष्ट्रीय अस्तित्व का दूसरा रूप कहा जा सकता है। समस्त आर्थिक, सामजिक एवं सांस्कृति क्रियायें मनुष्य द्वारा संचालित होती हैं। क्योंकि मानव जीवन के विभिन्न क्षेत्रों यथा जनसंख्या के विभिन्न आयाम, संस्कृत तथा सांस्कृतिक भूदृश्य, सामजिक संरचना, राजनैतिक संगठन, आर्थिक नियोजन तथा विकास की दिशा व दशा मानव ही तय करता है। निरन्तर जनसंख्या वृद्वि के कारण मनुष्य की आवश्यकताओं में भी गुणात्मक वृद्धि होती गयी और वह इन आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्रकृति-प्रदत्त संसाधनों का उपयोग करते आया है। निरंतर जनसंख्या वृद्धि ने मनुष्य को सोचने के लिए विवश किया, जिससे वह संसाधनों की रिक्तता के कारण या तो परिवार नियोजन जैसी योजनाओं पर ध्यान दिया या प्रवास के लिए बाध्य हुआ, जो गव्यात्यकता के मूल घटक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. गुप्ता, एम0एल0 एवं शर्मा, डी0डी0, 1990: सामाजिक विघटन, साहित्य भवन, आगरा।

2. चैहान, एस0एस0 एवं सिंह एवं गुप्ता, एम0 सी0 1995: सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक कारकों के सन्दर्भ में भारत की बढ़ती हुई जनसंख्या, सामाजिक लेख, प्रतियोगिता दपर्ण, वर्ष 17, अंक 12, जुलाई, पृष्ठ 1874-1875

3. मजूमदार, डी0एन0, 1980: एक औद्योगिक शहर की सामाजिक परिच्छेदिका (कानपुर), शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी।

4. शर्मा, एस0के0, 1996 रू आर्थिक विकास में सेवा क्षेत्र की भूमिका, प्रतियोगिता दर्पण हिन्दी मासिक, वर्ष 18, अंक 7, पु0 1095

5. सक्सेना, जी0वी0, 1981: ग्रामीण उत्तर प्रदेश में विभिन्न जातियों एवं समाजों में प्रवजन एवं मृत्युक्रम विभिन्नता, पुण्यराज प्रकाशन, रीवां ।

6. सिंह तारकेश्वर 1996: जनसंख्या संसाधन एवं पर्यावरण रू केराकत तहसील, जनपद जौनपुर का एक अध्ययन, पी-एच0डी0 थीसिस (अप्रकाशित) पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर।

7. श्रीवास्तव, नरेन्द्र कुमार: सामुदायिक स्वास्थ्य में परम्परागत चिकित्सक की भूमिका, पी-एच0डी0 शोध प्रबन्ध, सामाजिक विज्ञान विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी (1991)

8. कुमार, मिथिलेश, पाण्डेय, सूर्यकुमार एवं साहनी, निर्मल: जनसंख्या शिक्षा - सिद्धान्त एवं उपादेयता, जनसंख्या केन्द्र, इन्दिरानगर, लखनऊ (1985)

9. चान्दना, आर0सी0: जनसंख्या भूगोल, कल्याणी पब्लिशर्स, नई दिल्ली, लुधियाना (1986)

10. तिवारी, आनन्द मोहन: जनपद गोपालगंज, बिहार की जनसंख्या का भौगोलिक अध्ययन, पी-एच0डी0 शोध प्रबन्ध, भूगोल विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी (1992)

11. दूबे, के0के0 एवं सिंह, एम0बी0: जनसंख्या भूगोल, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर एवं नई दिल्ली (1994)

12. द्विवेदी, शशांक शेखर: ग्रामीण विकास कार्यक्रम मिर्जापुर जिला के अन्तर्गत छानबे विकास खण्ड के चयनित गाँवों पर आधारित समाज वैज्ञानिक अध्ययन (2011)।

Corresponding Author

Abhishek Kumar Tiwari*

Research Scholar